

भारतीय ज्ञान परम्परा की दृष्टि से सतत विकास : एक समग्र विमर्श

योगेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी एवं नीलम त्रिपाठी

<https://doi.org/10.61410/had.v21i3.333>

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परम्परा (Indian Knowledge Tradition) विश्व की प्राचीनतम एवं सतत विकसित होने वाली ज्ञान प्रणालियों में से एक है। यह केवल दार्शनिक चिंतन या धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं रही, बल्कि जीवन के समग्र संतुलन, प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व, सामाजिक समरसता तथा सतत विकास (Sustainability) की अवधारणा पर आधारित रही है। आज जब विश्व जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय संकट, उपभोक्तावाद और सामाजिक असंतुलन जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है, तब भारतीय ज्ञान परम्परा स्थिरता (Sustainability) का एक वैकल्पिक एवं मानवीय मॉडल प्रस्तुत करती है।

भारतीय दृष्टिकोण में स्थिरता केवल आर्थिक विकास नहीं, बल्कि प्रकृति, समाज और मानव जीवन के बीच संतुलित संबंध की स्थापना है।

भारतीय ज्ञान परम्परा की अवधारणा –

भारतीय ज्ञान परम्परा का आधार वेद, उपनिषद, पुराण, स्मृतियाँ, दर्शन, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, कृषि ज्ञान, लोक परम्पराएँ तथा जीवन पद्धतियाँ रही हैं। यह ज्ञान अनुभव, नैतिकता और प्रकृति-आधारित जीवन पर आधारित है।

भारतीय चिंतन में ज्ञान का उद्देश्य केवल सूचना प्राप्त करना नहीं, बल्कि –

“लोकसंग्रह” (सार्वजनिक कल्याण) और “सर्वे भवन्तु सुखिनः” की स्थापना है।

यह परम्परा निम्न सिद्धांतों पर आधारित रही हैकृ

प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व

सीमित उपभोग

नैतिक जीवन शैली

सामुदायिक उत्तरदायित्व

आध्यात्मिक एवं भौतिक संतुलन

स्थिरता (Sustainability) की भारतीय अवधारणा–

आधुनिक संदर्भ में स्थिरता का अर्थ है – वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को सुरक्षित रखना। किंतु भारतीय परम्परा में यह विचार हजारों वर्षों पूर्व से विद्यमान रहा है।

- पूर्व आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, का0सु0 साकेत पी0जी0 कालेज अयोध्या।
- पूर्व सदस्य जिला किशोर न्याय बोर्ड, फैजाबाद।

(क) प्रकृति को माता का स्वरूप

ऋग्वेद में पृथ्वी को माता कहा गया है –

“माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः”

यह दृष्टिकोण प्रकृति के शोषण नहीं बल्कि संरक्षण की भावना उत्पन्न करता है।

(ख) पंचमहाभूत सिद्धांत

भारतीय दर्शन के अनुसार मानव शरीर और प्रकृति पाँच तत्वों से निर्मित हैं—

पृथ्वी

जल

अग्नि

वायु

आकाश

इन तत्वों का संतुलन ही जीवन की स्थिरता सुनिश्चित करता है।

भारतीय जीवन शैली और पर्यावरणीय स्थिरता –

(i) पारंपरिक कृषि प्रणाली

भारतीय कृषि परम्परा जैविक, स्थानीय संसाधनों और ऋतुचक्र पर आधारित रही है।

मिश्रित खेती

वर्षा जल संरक्षण

बीज संरक्षण परंपरा

पशु आधारित कृषि

आज की ऑर्गेनिक फार्मिंग उसी ज्ञान का आधुनिक रूप है।

(ii) जल संरक्षण की परम्पराएँ

भारत में प्राचीन काल से –

बावड़ी

तालाब

कुएँ

जोहड़

जैसी सामुदायिक जल व्यवस्थाएँ स्थिर जल प्रबंधन के उदाहरण हैं।

(iii) वन और जैव विविधता संरक्षण

देववन, सरना, sacred groves जैसी परंपराओं ने जैव विविधता को सुरक्षित रखा। धार्मिक आस्था ने पर्यावरण संरक्षण को सामाजिक दायित्व बनाया।

सामाजिक स्थिरता और भारतीय ज्ञान—

भारतीय समाज में स्थिरता केवल पर्यावरण तक सीमित नहीं रही, बल्कि सामाजिक संरचना में भी दिखाई देती है।

(क) परिवार संस्था

संयुक्त परिवार प्रणाली —
संसाधनों का साझा उपयोग
वृद्धों की देखभाल
सामाजिक सुरक्षा
का माध्यम रही है।

(ख) ग्राम स्वावलंबन

भारतीय ग्राम व्यवस्था आत्मनिर्भर थी —

स्थानीय उत्पादन
स्थानीय उपभोग
सामुदायिक श्रम

यह मॉडल आज के Local Sustainable Economy की अवधारणा से मेल खाता है।

गांधीवादी दृष्टिकोण और स्थिरता—

महात्मा गांधी आधुनिक स्थिरता चिंतन के अग्रदूत माने जाते हैं।

(i) ग्राम स्वराज

गांधी का आदर्श गाँवकृ
आत्मनिर्भर
विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था
स्थानीय उत्पादन

यह Sustainable Local Economy का मॉडल है।

(ii) ट्रस्टीशिप सिद्धांत

धन और संसाधनों पर व्यक्ति का स्वामित्व नहीं बल्कि संरक्षण दायित्व है।

(iii) सीमित उपभोग

गांधी का प्रसिद्ध विचार –

पृथ्वी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है, लोभ की नहीं।

यह आधुनिक Sustainable Consumption Theory से मेल खाता है।

श्री अरविंद का आध्यात्मिक विकास सिद्धांत–

श्री अरविंद ने विकास को केवल भौतिक प्रक्रिया नहीं बल्कि चेतना के विकास के रूप में देखा।

प्रमुख अवधारणाएँ :

Integral Yoga

Evolution of Consciousness

Divine Life on Earth

अरविंद के अनुसार मानव विकास का अंतिम लक्ष्य प्रकृति के साथ उच्चतर सामंजस्य स्थापित करना है।

यह दृष्टिकोण Spiritual Ecology की अवधारणा से जुड़ता है।

दीनदयाल उपाध्याय और एकात्म मानववाद–

दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद (Integral Humanism) भारतीय स्थिरता मॉडल का महत्वपूर्ण सिद्धांत है।

चार आयाम:

शरीर

मन

बुद्धि

आत्मा

विकास तभी सार्थक है जब ये चारों संतुलित हों।

उन्होंने पश्चिमी पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों की आलोचना करते हुए सांस्कृतिक-आधारित विकास मॉडल प्रस्तुत किया।

भारतीय ज्ञान परम्परा और पारिस्थितिकी सिद्धांत

(i) Deep Ecology

मानव प्रकृति का भाग है : भारतीय दर्शन से साम्यता।

(ii) Social Ecology



सामाजिक असमानता पर्यावरण संकट को बढ़ाती है।

(iii) Ecological Modernization

परंपरागत ज्ञान, आधुनिक तकनीक = सतत विकास।

भारतीय परम्परा इन तीनों दृष्टिकोणों का समन्वित रूप प्रस्तुत करती है।

आर्थिक स्थिरता और 'अपरिग्रह' का सिद्धांत—

भारतीय दर्शन में अत्यधिक संचय को नकारा गया है।

अपरिग्रह (Non & Possessiveness) और संयमित उपभोग स्थायी अर्थव्यवस्था के मूल सिद्धांत हैं।

महात्मा गांधी का कथन —

“पृथ्वी प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकता पूरी कर सकती है, लेकिन किसी एक के लोभ को नहीं।”

यह विचार आज के Sustainable Consumption Model का आधार बन सकता है।

स्वास्थ्य और जीवन स्थिरता रू आयुर्वेदिक दृष्टिकोण—

आयुर्वेद मानव और प्रकृति के संतुलन पर आधारित है —

ऋतुचर्या

दिनचर्या

संतुलित आहार

प्राकृतिक उपचार

यह Preventive Healthcare का प्राचीन भारतीय मॉडल है, जो आधुनिक जीवनशैली रोगों के समाधान में उपयोगी है।

भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक सतत विकास लक्ष्य (SDGs)—

संयुक्त राष्ट्र के Sustainable Development Goals (SDGs) के कई लक्ष्य भारतीय ज्ञान परम्परा से सामंजस्य रखते हैं —

SDGs

भारतीय परम्परा

स्वच्छ जल

पारंपरिक जल संरक्षण

स्वास्थ्य

आयुर्वेद एवं योग

सतत उपभोग

अपरिग्रह

जलवायु संरक्षण

प्रकृति पूजन

सामुदायिक विकास

ग्राम स्वराज

इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली आधुनिक वैश्विक विकास विमर्श को सांस्कृतिक आधार प्रदान करती है।

समकालीन चुनौतियाँ –

उपभोक्तावाद और बाजारवाद

प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन

पारंपरिक ज्ञान का क्षरण

शहरीकरण और सांस्कृतिक विघटन

इन चुनौतियों के कारण स्थिर जीवन शैली कमजोर हो रही है।

पुनर्स्थापन की आवश्यकता–

भारतीय ज्ञान परम्परा को पुनर्जीवित करने हेतुक

शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेश

स्थानीय ज्ञान का दस्तावेजीकरण

पारंपरिक कृषि और जल प्रबंधन का पुनर्प्रयोग

योग, आयुर्वेद और नैतिक जीवन शैली का प्रसार

समुदाय आधारित विकास मॉडल

आवश्यक हैं।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परम्परा स्थिरता का केवल सिद्धांत नहीं बल्कि जीवन का व्यावहारिक दर्शन है। यह मनुष्य को प्रकृति का स्वामी नहीं, बल्कि उसका सहयोगी मानती है। आधुनिक विकास मॉडल जहाँ संसाधनों के अधिकतम उपयोग पर आधारित है, वहीं भारतीय दृष्टिकोण संतुलन, संयम और सह-अस्तित्व पर आधारित है।

आज वैश्विक संकटों के दौर में भारतीय ज्ञान परम्परा मानवता को यह संदेश देती है कि—

स्थिर विकास तकनीक से नहीं, बल्कि संतुलित चेतना से संभव है।

अकादमिक संदर्भ –

1. Radhakrishnan, S. (Ed.). The Principal Upanishads. HarperCollins/George Allen & Unwin.
 2. Kangle, R. P. The Kautiliya Arthasastra. University of Bombay.
 3. Olivelle, Patrick. King, Governance, and Law in Ancient India: Kautilya's Arthasastra. Oxford University Press, 2013.
 4. Sen, Amartya. Development as Freedom. Oxford University Press, 1999.
 5. Sachs, Jeffrey D. The Age of Sustainable Development. Columbia University Press, 2015.
 6. Shiva, Vandana. Staying Alive: Women, Ecology and Development. Zed Books, 1988.
 7. Guha, Ramachandra. Environmentalism: A Global History. Longman, 2000.
 8. Gadgil, Madhav & Ramachandra Guha. This Fissured Land: An Ecological History of India. University of California Press, 1992.
 9. Nair, K. R. भारतीय पारंपरिक ज्ञान, कृषि एवं पारिस्थितिकी से संबंधित विभिन्न अध्ययन।
 10. UNESCO. Local and Indigenous Knowledge Systems (LINKS) — Indigenous knowledge और sustainability के अध्ययन के लिए।
 11. United Nations. Transforming Our World: The 2030 Agenda for Sustainable Development. United Nations, 2015.
 12. United Nations. Sustainable Development Goals (SDGs) — विशेषतः SDG 6, 11, 12, 13, 15 और 16।
 13. Ministry of Education, Government of India. National Education Policy 2020 — भारतीय ज्ञान परम्परा और शिक्षा के समकालीन पुनर्संदर्भीकरण के लिए।
 14. Ministry of Culture, Government of India. Indian Knowledge Systems (IKS) — भारतीय ज्ञान परम्परा के संरक्षण, संवर्धन और समकालीन उपयोग के लिए।
-